# पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

## विलेज प्रोफाइल

## नयागाँव पुनाली

**गाँव- नयागाँव पुनाली**

**पंचायत-पुनाली**

**तहसील-दोवडा, जिला-डूंगरपुर, राजस्थान**

**पीस**

**नयागाँव पुनाली गाँव का परिचय**

नयागाँव पुनाली ग्राम पंचायत का एक राजस्व गाँव है, जो जिला मुख्यालय डूंगरपुर से 20 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में बसा हुआ है। पुनाली पंचायत में 5 गाँव है- पुनाली, पांतली, वाडापुनाली, नयागाँव पुनाली और गेहुवाडा। नयागाँव पुनाली के सबसे निकटवर्ती गाँव हैं- भोजातो का ओड़ा, धानीहथाई, कालुगामडा, बीकासोर, गेहुवाडा, वाडापुनाली, पुनाली, कोलखंडा पाल, रामा, जोगीवाड़ा ।

नयागाँव पुनाली गाँव में शिलालेख 10 दिसम्बर, 2017 को हुआ और शिलालेख के दिन ही गाँव सभा का गठन भी कर दिया गया। नयागाँव पुनाली गाँव में 290 घर हैं। गाँव आबादी लगभग 1300 है। गाँव में एस.टी. जाति के अलावा ओ.बी.सी. और सामान्य जाति के लोग भी निवास करते हैं। एस.टी. जाति में परमार, कटारा, ननोमा उपजाति के लोग हैं। इनके साथ ही कुम्हार, दर्जी, नाई और राजपूत समाज के लोग भी रहते हैं। गाँव में अधिकतर लोगों को पेसा कानून की जानकारी है। हर माह एक निश्चित तारीख को गाँव सभा की बैठक की जाती है। गाँव में वागड़ मजदूर किसान संगठन के कार्यकताओं के द्वारा पेसा कानून की जानकारी और जागरूकता का प्रसार करने के लिए बैठकें और कार्यशालायें आयोजित की जाती हैं। गाँव की पूरी जमीन का रकबा 289 हेक्टेयर है। जिसमें कृषि योग्य जमीन, बिलानाम जमीन, चारागाह, जंगल की जमीन और दो बड़े पहाड़ शामिल हैं। कुछ छोटी-छोटी डूंगरीया हैं, जिन पर लोग घर बना कर रहते हैं।

**यातायात**

नयागाँव पुनाली जाने के लिए डूंगरपुर के बस स्टैंड से आसपुर जाने वाली बस से पुनाली गाँव के चौराहे पर उतर कर ऑटो से नयागाँव पुनाली गाँव जाया जा सकता है। डूंगरपुर से पुनाली के लिए सरकारी और प्राइवेट बस दोनों ही मिल जाती है। पुनाली से नयागाँव पुनालीगाँव 7 किमी दूर है। गाँव में 3 पक्की सड़कें, 4 सी.सी. सड़क और 10 कच्ची सड़के हैं। सी.सी. सड़क और कच्ची सड़क गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए है। गाँव की एक मुख्य पक्की सड़क गाँव की सीमा से पांतली गाँव में जाती है। दूसरी पक्की सड़क गाँव के दक्षिण सीमा से शुरू होकर वाडाहथाई जाती है। एक सड़क गाँव के भीतर से शुरू होकर गाँव में ही खत्म हो जाती है। गाँव में बस स्टैंड नहीं है। इसके लिये 7 किमी दूर पुनाली जाना पड़ता है, जहाँ से बस, ऑटो, जीप दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते हैं। लेकिन गाँव के फलों में केवल नीजी वाहन जैसे ऑटो, मोटर साइकिल या पैदल जाया जाता है। खरीदारी के लिए बड़ा बाजार पुनाली में है और मुख्य बाजार डूंगरपुर 20 किमी दूर जाना पड़ता है। जहाँ पर सभी प्रकार की घरेलू खरीदारी के अलावा शादी-ब्याह और त्यौहारों की खरीदारी की जाती है।

**पेयजल की सुविधा**

गाँव में व्यक्तिगत 15 कुएं, 1 सार्वजनिक बावड़ी और 12 हैंडपंप हैं। गाँव के 5 कुएं जल-स्तर नीचे चले जाने के कारण सूखे ही रहते हैं और 4 हैंडपंप पाइप में जंग और आयरन की वजह से छेद पड़ने पर ख़राब हो गये हैं। सार्वजनिक बावड़ी भी सफाई के अभाव में गन्दगी से अटी पड़ी है और उसकी मुंडेर भी नहीं बनी है। चालू पेयजल

स्रोतों के पानी में फ्लोराइड की मात्रा ज्यादा है, जिस कारण बीमारियाँ हो जाती हैं। लेकिन मजबूरी में और गाँव में आर.ओ. प्लांट नहीं होने के कारण गाँव के लोग इसी को उपयोग में लाते हैं।

**कृषि और रोजगार की स्थिति**

गाँव में कृषि योग्य जमीन पर गेहूँ, मक्का, उडद, ज्वार, तुअर, मूँग और चना की खेती की जाती है। जिन लोगों के पास निजी बोरवेल और गहरे कुएं हैं, वे ही धान, गेहूँ और सरसों की खेती कर पाते हैं। गाँव में नदी, चेकडैम और नहर की सुविधा नहीं है। सिंचाई के पानी की कमी के चलते खाद्य ऊपज चार या पांच माह खाने भर की ही हो पाती है। अधिकतर कृषि जमीन समतल है, लेकिन वह पटेलों और राजपूतो के पास है। आदिवासीयों के कब्जे की जमीन ऊबड़-खाबड़ और पहाड़ियों की ढलान वाली है। समतल नहीं होने से खेती करने में समस्या होती है। रोजगार के नाम पर मनरेगा में मजदूरी और दिहाड़ी मजदूरी करते हैं। मनरेगा में साल में 30-40 दिन के लिए ही काम मिल पाता है। मनरेगा में काम की नपती पूरी नहीं होती है, जिस कारण काम की मजदूरी भी कम ही मिलती है। इसके अलावा युवा रोजगार की तलाश में डूंगरपुर शहर में आते हैं । साथ ही पड़ोसी राज्य गुजरात के अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर भी जाते हैं, जहाँ वे कपास के खेतों में या आइसक्रीम फैक्ट्री में या कपड़े की मिलों में काम करते हैं। अधिकतर लोग गुजरात की नमकीन बनाने की फैक्ट्री में काम करते हैं।

**सिंचाई**

गाँव में सिंचाई के बड़े स्रोत नहीं हैं। गाँव में 2 छोटे नाले, 1 तालाब (पिदुला तालाब), 1 एनिकट, 10 चालू कुएं और 3 या 4 निजी बोरवेल हैं। ग्रीष्म ऋतु के दौरान कुओं में पशुओ को पिलाने मात्र ही पानी शेष रहता है। गर्मियों में सभी जल स्रोतों में पानी का जल स्तर नीचे चला जाता है और इनमें पानी की कमी हो जाती है। क्योंकि इनकी देखभाल और साफ़-सफाई समय पर नहीं की जाती है। गाँव के पिदुला तालाब में भी साल भर पानी नहीं रहता है। साल के अप्रैल माह तक इसमें पानी लगभग सूख जाता है। अप्रैल तक इसके पानी से लोग मोटर लगाकर खेतों में सिंचाई करते हैं और पशुओ को पानी पिलाते हैं। लेकिन इसकी भी रिंगवाल मरम्मत और गहरीकरण पर ध्यान नहीं दिया जाता है। सम्भव है कि आने वाले कुछ सालों में यह बिल्कुल खत्म हो जाये। गाँव के नाले जो बारिश के समय ही बहते हैं, उनपर कोई चेकडैम नहीं बना है। एक नाले पर बना गाँव का एकमात्र एनिकट भी पुराना है और इसके बाँध की दिवार में दरारें पड़ गयी हैं, जिनसे पानी बह कर निकल जाता है। चालू कुओं से पशुओं के पीने के पानी का बंदोबस्त किया जाता है। वर्तमान में पानी का स्तर 250 फीट से नीचे चला गया है, जो कि भविष्य में पानी को सहेजने के प्रति जागरूक न होने पर और भी गहरे में जाएगा।

**शिक्षा व स्वास्थ्य**

गाँव में 2 प्राथमिक विद्यालय और 1 रा.मा. विद्यालय है। दोनों प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक वर्ष 2018-19 में 120 छात्र-छात्राओं का नामांकन हुआ है तथा 4 अध्यापक नियुक्त हैं । माध्यमिक विद्यालय में इस शैक्षणिक वर्ष में 157 छात्र-छात्राओं का नामांकन हुआ है तथा 6 अध्यापक नियुक्त हैं। प्राथमिक स्कूलों को परकोटा बना कर सुरक्षित नहीं किया गया है। मिड-डे मिल बनाने के लिए रसोई घर है, लेकिन इसकी स्थिति अच्छी नहीं है।

सभी स्कूलों में अध्यापन कक्ष कम हैं, जिसके चलते दो कक्षायें एक साथ बैठती हैं। ना ही खेल का मैदान है और ना ही शौचालय की हालत अच्छी है। शौचालय में पानी की व्यवस्था नहीं है और साफ सफाई भी नहीं होती है। इस कारण बच्चे बाहर खुले में शौच के लिए जाते हैं। अध्यापकों की कमी के कारण पढ़ाई अच्छे से नहीं होती है। पढ़ाई अच्छी ना होने के कारण गाँव के बच्चों का सीखने और ज्ञान का स्तर भी काफी निम्न है। माध्यमिक स्कूल में नियुक्त अध्यापक समय पर नहीं आते हैं। छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग शौचालय नहीं है। छात्र-छात्राओं के लिए पीने के स्वच्छ पेयजल की सुविधा नहीं है। बच्चों को हैंडपंप का फ्लोराइड वाला पानी पीना पड़ता है। स्नातक स्तरीय पढ़ाई के लिए 20 किमी दूर डूंगरपुर शहर जाना पड़ता है। अधिकतर बच्चे कॉलेज के पास ही किराये पर कमरे लेकर रहते हैं। गाँव में 3 आंगनवाड़िया हैं, जिनकी हालत अच्छी नहीं है। बारिश में उनकी छतों से पानी टपकता है और प्लास्टर गिर रहा है। साथ ही वहाँ मिलने वाले पोषाहार की ख़राब गुणवत्ता को लेकर क्षेत्रवासियों में शिकायत है। गाँव में उप-स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है। नजदीकी उप-स्वास्थ्य केन्द्र पांतली में है। वहाँ ए.एन.एम. बैठती है, जो दवाइयाँ दे देती है, लेकिन न तो पीने के पानी की व्यवस्था है और न शौचालय बना है। सरकारी अस्पताल 7 किमी दूर स्थित पुनालीगाँव में ही है। बडा अस्पताल 20 किमी दूर डूंगरपुर में है। मरीज के गंभीर होने या अत्यधिक नाजुक स्थिति में मरीज को उदयपुर के सरकारी हॉस्पिटल में रेफर किया जाता है। पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल और पोस्ट ऑफिस पुनाली गाँव में है।

**नयागाँव पुनाली की चिन्हित समस्याओं का विवरण निम्न प्रकार है-**

**प्राकृतिक संसाधन**

गाँव में जंगल की जमीन पर वन विभाग का कब्ज़ा है। पहले जंगल हरा-भरा था लेकिन वन विभाग के कब्जे में जाने के बाद जंगल बर्बाद हो गया है। अब वहाँ मात्र बबूल के पेड़, झाड़ियाँ और कुछ सागवान के पेड़ हैं एवं घास होती है। लगभग सभी पेड़ों की कटाई हो चुकी है और जंगल बहुत कम हो गया है। गाँव में चारागाह की जमीन नहीं है। बिलानाम भूमि भी कम हो गयी है। इस पर लोगों ने अपने खेत बना लिये हैं या कब्ज़ा कर लिया है। खेती और आवासीय जमीन भी कम हो गयी है क्योंकि गाँव की आबादी बढ़ती जा रही है।

**भूमि व जल प्रबंधन की कमी**

गाँव में लोग अपनी कई पीढ़ियों से रहते आ रहे हैं, लेकिन लोगों के पास खातेदारी हक नहीं है। और यदि है भी तो न्यूनतम दो बीघा भूमि का पट्टा है। इस कम जमीन में होने वाली खेती घर चलाने के लिए पर्याप्त नहीं है। कृषि भूमि ऊबड़-खाबड़ और पथरीली है, जिस कारण समतलीकरण की आवश्यकता है। गाँव में पानी की सुविधा के लिए 2 बरसाती नाले, 10 चालू कुएं, 1 एनिकट और 1 तालाब है। 5 कुएं गहराई कम होने और जल-स्तर नीचे जाने के कारण वर्षभर सूखे ही रहते हैं। एनिकट के बाँध की दीवार में रिसाव के कारण पानी साल भर नहीं रहता है। बारिश के बंद होते ही महीने भर में खत्म हो जाता है। गाँव के पिदुला तालाब में भी साल भर पानी नहीं रहता है। साल के अप्रैल माह तक इसमें पानी लगभग सूख जाता है। अप्रैल तक इसके पानी से लोग मोटर

लगाकर खेतों में सिंचाई करते हैं और पशुओ कों पानी पिलाते हैं। इसकी भी रिंगवाल मरम्मत और गहरीकरण पर ध्यान नहीं दिया जाता है। गाँव में असिंचित खेतों में पानी पहुँचाने के लिए नहर नहीं निकाली गयी है। असिंचित खेतों में सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण उनमें केवल बारिश की पानी से ही फसल की पैदावार हो पाती है। गर्मियों के मौसम में पानी की कमी हो जाती है। गाँव में पानी का स्तर 250 फीट से नीचे चला गया है। पेयजल की व्यवस्था के लिए गाँव में 12 हैण्डपम्प हैं, जिसमें से 4 हैंडपंप ख़राब है। इनके पाइप में छेद हो गये हैं और ये गहरे भी कम ही हैं। गाँव में 1 सार्वजनिक बावड़ी भी है। सार्वजनिक बावड़ी भी सफाई के अभाव में गंदगी से भर गयी है और उसकी मुंडेर भी नहीं बनी है। जिस कारण हादसों की सम्भावना बनी रहती है। सभी चालू हैण्डपम्प और बोरवेल का पानी फ्लोराइड से दूषित है। गाँव में फ्लोराइड वाले पानी से बचाव के लिए एक भी आर.ओ. प्लांट नहीं लगा है। वर्षा के जल को संरक्षित करने के विषय की ओर हाल फिलहाल गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है। गर्मी में ना तो पीने को पानी मिल पाता है और ना ही सिंचाई का पानी मिल पाता है।

**पशुपालन संबंधित समस्या**

पांतली में प्रमुखतया गाय, बैल, भैंस व बकरी पाली जाती है। दुधारू पशुओं से इतना ही दूध हो पाता है कि घर के छोटे बच्चों का काम चल जाये। आवश्यकता पड़ने पर गाँव में किसी दुकान से खरीदते है। पशुओं को खिलाने के लिए चारा पर्याप्त मात्रा में नहीं होता है। गाँव में चरागाह की जमीन गाँव वालों के कब्जे में है। खेती में सिंचाई के पानी की कमी के कारण खेतों में पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा में चारा भी नहीं उगाया जा सकता है। जो भी चारा बारिश के माह में होता है वह केवल चार या पांच माह ही चल पाता है। उसके पश्चात खरीद कर लाना पड़ता है। चारे की एक पुली या गट्ठर सात रूपये में खरीदते हैं।

**कृषि एवं खाद्यान्न की समस्या**

नयागाँव पुनाली गाँव में सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति बारिश के मौसम में ही हो पाती है। इस कारण खाद्यान्न फसल बारिश में ही पैदा होती है। गर्मी के मौसम में पानी की कमी हो जाती है। सिंचाई के जो भी संसाधन है, वे सारे जर्जर और बेकार स्थिति में हैं। ग्रीष्म ऋतु में जिन खेतों में फसल उगाई जाती है, वे बोरवेल के पानी से सिंचित हैं। गाँव में भू-जल स्तर 250 फीट से भी नीचे चला गया है। बरसात के पानी के संरक्षण पर अगर ध्यान नहीं दिया गया तो कुछ सालों बाद गाँव में पानी का स्तर और भी अधिक गहराई तक चला जाएगा। इसके साथ ही वर्तमान में बारिश की मात्रा और पानी को ना सहेजने की प्रवृत्ति है, वो बनी रही तो गाँव में पीने तथा कृषि के लिए पानी का बड़ा संकट उत्पन्न होने वाला है। आदिवासियों के कब्जे की कृषि जमीन ऊबड़-खाबड़ और छोटी पहाड़ी वाली है, जिस पर खेती मुश्किल से हो पाती है। गाँव में सिंचाई के पानी की व्यवस्था के लिये करीब 10 कुऐं, 1 तालाब, 1 एनिकट है। लेकिन कुओं को छोड़कर बाकी सभी अधिकतर गर्मी के मौसम में सूख जाते हैं। गाँव में खाने में मुख्यतः मक्का उपयोग में आता है। इसके अलावा धान, गेहूँ, ज्वार, उड़द, तुअर, चने और सरसों की खेती की जाती है। यह खेती भी वही लोग कर पाते हैं, जिनके बोरवेल या कुओं में पानी की आवक रहती है। खेती में उपजा अनाज साल के 5 या 6 माह ही चल पाता है। इसके पश्चात खाने के लिए राशन

की आपूर्ति का विकल्प सरकारी गेहूँ है या अनाज खरीद कर लाना पड़ता है। सरकारी उचित मूल्य की दुकान नरनिया गाँव में है। इसको अभी किराये के कमरे में चलाया जा रहा है। राशन की दुकान पर केवल गेहूं मिलता है। चीनी तथा केरोसीन त्यौहारों पर ही मिलता है। राशन दुकान पर पॉस मशीन की भी समस्या रहती है।

**आवागमन की समस्या**

गाँव में कुल 3 पक्की सड़कें, 4 सी.सी. सड़क और 10 कच्ची सड़कें हैं। गाँव के भीतरी फलों में जाने के लिए अधिकतर सी.सी. और कच्ची सड़क ही हैं। गाँव में एक पक्की सड़क टूट रही है। तेज़ बारिश की वजह से जगह-जगह पर सड़क बह गयी है और गड्डे हो गये हैं। सी.सी. सड़क के किनारे नालियाँ पक्की नहीं बनायी गयी हैं जिससे गंदगी सड़क पर फ़ैल जाती है। गाँव की पगडण्ड़िया इतनी पतली हैं कि इस पर ऑटो, मोटर साईकिल या पैदल ही जा सकते हैं। कच्ची सड़कों और पगडण्डियों पर धूल उड़ने की समस्या आम है। साथ ही बारिश में कच्ची सड़कें कीचड़ से भर जाती हैं, जिस कारण आने-जाने में समस्या रहती है। गाँव के भीतर रहने वाले घर के लोग कच्ची सड़क की समस्या से सबसे अधिक प्रभावित रहते हैं। खड्डों की वजह से अक्सर दुर्घटना की आशंका रहती है। गाँव के फलों में केवल नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल या पैदल जाया जाता है।

**शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर**

नयागाँव पुनाली में 2 प्राथमिक स्कूल और 1 माध्यमिक स्कूल है। सभी विद्यालयों में छात्रों की संख्या की तुलना में अध्यापकों की नियुक्ति कम की गयी है। प्राथमिक स्कूलों में अध्यापन कक्ष कम हैं, जिससे दो कक्षायें एक साथ बैठ कर पढ़ती हैं। स्कूलों में खेल के मैदान और शौचालय की हालत अच्छी नहीं है। दोनों प्राथमिक स्कूलों में अध्यापक सिर्फ 4 ही है, जिस कारण पढाई अच्छे से नहीं होती है। पढाई अच्छी ना होने के कारण गाँव के बच्चों का सीखने और ज्ञान का स्तर भी काफी निम्न है। माध्यमिक स्कूल में भी अध्यापकों की नियुक्ति पूरी नहीं की गयी है। नियुक्त अध्यापक समय पर स्कूल में भी नहीं आते हैं या अवकाश लेकर चले जाते हैं। यहाँ खेल के मैदान की स्थिति अच्छी नहीं है। छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग शौचालय की व्यवस्था नहीं है। शौचालयों में पानी की सुविधा नहीं है और न ही सफाई रहती है। छात्र-छात्राओं के लिए पीने के स्वच्छ पेयजल की सुविधा नहीं है। बच्चों को हैंडपंप का फ्लोराइड वाला पानी पीना पड़ता है। उच्च शिक्षा के लिये 20 किमी दूर डूंगरपुर शहर जाना पड़ता है। अधिकतर बच्चे कॉलेज के पास ही कमरा किराये पर लेकर रहते हैं। गाँव में 3 आंगनवाड़िया हैं। तीनों ही जर्जर अवस्था में हैं। छत से प्लास्टर गिरता है। आंगनवाड़ी केंद्र से मिलने वाले पोषाहार को लेकर ग्रामीणों में शिकायत है। गाँव में कोई उप-स्वास्थ्य केंद्र नहीं है। सरकारी हॉस्पीटल 7 किमी दूर पुनाली गाँव में है। बडा हॉस्पीटल 20 किमी दूर डूंगरपुर में है। मरीज के गंभीर होने या अत्यधिक नाजुक स्थिति में मरीज को उदयपुर के सरकारी हॉस्पिटल में रेफर किया जाता है ।

**आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी**

दोवडा ब्लॉक के अन्य गाँवो की तरह ही नयागाँव पुनाली में भी रोजगार की स्थिति काफी खराब है। गाँव में लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए खेती करते हैं या फिर नरेगा में मिलने वाले काम करते हैं। गाँव के युवा जो थोड़ा बहुत पढ़ना लिखना जानते हैं, वे उदयपुर जिले में किसी फैक्ट्री में मशीन पर काम करते हैं या गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत, मोडासा या महानगर मुंबई में मजदूरी करने के लिये जाते हैं। जहाँ उनको ज्यादातर नमकीन की फैक्ट्री में काम मिल जाता है। आजीविका के साधनों के अभाव में लोगो का गाँव से पलायन भी बढ़ रहा है। गाँव में मनरेगा पर काम मिलता है। जिसमें गाँव की महिलायें जाती हैं। जो पुरुष यहाँ रह कर खेती करते हैं, वे भी नरेगा में काम पर जाते हैं। वर्तमान में मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है वह भी 100 रूपये तक ही दी जाती है। मनरेगा में भी काम 50-55 दिन के लिए ही मिलता है। कुछेक लोगों को काम करने के बाद मजदूरी नहीं मिली है। जिसका जवाब माँगने पर पैसा बैंक खातों में स्थानान्तरण की बात कह कर टाल दिया जाता है।

**गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-**

| संसाधन | हालत | सम्भावना |
|---|---|---|
| **जल**<br>नाला<br>एनिकट<br>तालाब<br>कुआं<br>हैण्डपम्प<br>बोरवेल<br>सार्वजनिक बावड़ी | गाँव में 2 बरसाती नाले हैं। एक नाले पर बारिश का पानी रोकने के लिए 1 एनिकट बना हुआ है, जो जर्जर स्थिति में है। एनिकट में भी पानी बारिश के समय ही रहता है, क्योंकि बाँध की दरारों में से पानी बह कर निकल जाता है। ज्यादातर कुएं कम गहराई होने और पानी का लेवल ज्यादा नीचे जाने से सूखे हैं। 12 में से 4 हैंडपंप में पाइप खराब होने की वजह से पानी नहीं आता है। जो पेयजल स्रोत चालू हैं, उनका पानी भी फ्लोराइड युक्त है। गाँव में सिंचाई और मवेशियों के पानी के लिये 1 तालाब है, लेकिन गर्मी में मवेशियों के पीने के पानी की समस्या हो जाती है। गर्मी में सभी जल-स्रोतों में पानी की कमी हो जाती है। सार्वजनिक बावड़ी साफ़-सफाई के अभाव में गंदगी से भर गयी है। | गाँववासियों के अनुसार यदि एनिकट को फिर से ठीक कर बाँध की ऊँचाई बढ़ाई जाये तो पानी ज्यादा इकठ्ठा हो पाएगा। तालाब के कीचड़ को साफ़ करके गहरा करना। इससे खेतों में सिंचाई के पानी की सुविधा अच्छी हो सकती है। खेतों में छोटे-छोटे चेकडैम बनाये जाए तो गाँव में जमीनी पानी का जलस्तर ऊँचा होगा। दूषित पानी के प्रभाव से बचाव के लिए कुछ जगहों पर आर.ओ. प्लांट लगाने चाहिए। यदि बावड़ी कों साफ़ करके उसका परकोटा तैयार किया जाये तो गाँव में पानी का एक अच्छा स्रोत मिल सकता है। |

| | | |
|---|---|---|
| **जमीन**<br>कृषि भूमि<br>बिलानाम भूमि<br>जंगल<br>पहाड़ियाँ | खेती की जमीन ऊबड़-खाबड़, पहाड़ियों की ढलान वाली और पथरीली है। पानी की कमी के कारण खेती केवल बारिश के मौसम में होती है। गाँव की बिलानाम जमीन कम हो गयी है और जंगल भूमि पर वन विभाग ने कब्ज़ा कर रखा है। ज्यादातर समतल जमीन पटेलों और राजपूतों के कब्जे में हैं। आदिवासियों के कब्जे की जमीन पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ है। दावा फाइल्स लगाने के बाद भी जमीन के पट्टे नहीं मिले हैं। | गाँवसभा के द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत अपना काम योजना के तहत ऊबड़-खाबड़ जमीनों को समतलीकरण कर उसे उपजाऊ बनाया जा सकता है। जिस जमीन पर किसी प्रकार की उपज या पैदावार नहीं होती है, उस पर फलदार वृक्षारोपण करके गाँव को कमाई का स्रोत मिल सकता है। इससे लोगों की आय के साधन बढ़ सकते हैं। तालाबों की मरम्मत और एनिकट की ऊँचाई बढ़ा कर मछलीपालन किया जा सकता है । |
| **सड़क**<br>पक्की सड़क<br>सी.सी. सड़क<br>कच्ची सड़क | गाँव में 3 पक्की सड़के हैं, जिसमें से 1 पक्की सड़क तेज बारिश की वजह से टूट गयी है और उसमे गड्ढे हो गये हैं। सी.सी. सड़क में गड्ढे पड़ गये हैं। सड़क किनारे नालियाँ नहीं बनी हैं। इससे गंदगी होने से बीमारियाँ फैलने का डर रहता है। गाँव में जाने के लिए 10 कच्चे रास्ते भी हैं, जो कि काफी ज्यादा ख़राब हालत में हैं। बारिश में कच्चे रास्तों का उपयोग करने वाले गाँववासी सबसे ज्यादा परेशानी में रहते है। गाँव में बस स्टैंड नहीं है। | यदि गाँव के सभी कच्चे रास्ते सी.सी. सड़क में बदले जाये और सी.सी. सडकों को चौड़ा करके पुनः बनाया जाये तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी। |
| **प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल** | गाँव में 2 प्राथमिक और 1 माध्यमिक स्कूल है। बच्चों की तुलना में अध्यापकों की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पा रही है। स्कूलों में खेल का मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है। पीने के पानी की उचित एवं साफ़ व्यवस्था भी नहीं है। स्कूलों में फर्श में गड्ढे पड़ गये हैं, जिस कारण बच्चों को बैठने में दिक्कत होती है। नियुक्त अध्यापक भी समय से नहीं आते हैं। | स्कूलों की फर्श के गड्ढों को भरवा कर बैठने के लिए दरी और टेबल कुर्सी दी जाये। इसके अलावा स्कूल के शौचालय की भी मरम्मत करवाई जा सकती है। खेल के मैदान को समतल करके बाउन्ड्री बना कर सुरक्षित किया जा सकता है। स्कूल में पीने के पानी के लिए आर.ओ. का प्रबन्ध किया जाये। गाँव सभा के द्वारा प्रस्ताव लेकर शिक्षा विभाग को अध्यापकों की नियुक्ति के लिए ज्ञापन दिया जाये। |

| | | |
|---|---|---|
| श्मशान घाट | गाँव में दो श्मशान घाट हैं। दोनों ही खुले में हैं और पूरी तरह से टूट चुके हैं। ना तो वहाँ पर टीनशेड है और ना ही चबूतरा है। | नए सिरे से निर्माण करवाना है और लकड़ी रखने के लिए भवन बनवाना है। |

**गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता**

| क्र. सं. | समस्याएं | सार्वजनिक/ व्यक्तिगत | कारण | समाधान | तात्कालिक/ दीर्घकालिक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | **कृषि संबधी समस्या** | **व्यक्तिगत / सार्वजनिक** | आदिवसियों के कब्जे की जमीन ऊबड़-खाबड़ है। असिंचित खेतों में सिंचाई की सुविधा भी नहीं है। गाँव के 2 नालों का बरसात का पानी गाँव में रोकने के लिए 1 एनिकट और 1 तालाब है, लेकिन एनिकट के जर्जर होने और तालाब की गहराई कम होने के कारण पानी जल्दी ख़त्म हो जाता है। सिचाई के लिए नहर की सुविधा भी नहीं है। भू-जल का स्तर 250 फीट नीचे चला गया है। उन्नतशील बीज का अभाव होने से उत्पादन प्रभावित होता है। | खेतों को गाँव सभा द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत-अपना काम योजना के अंतर्गत समतलीकरण, बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों की मेड़बंदी तथा कच्चे चेकडैम का निर्माण। खेतों में पानी को रोकने के लिए टाके (पक्के खड्डे) बनवाना। गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊँचा किया जा सकता है। बंद हैंडपंप को चालू करवाना और गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकि फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए। | **तात्कालिक** |
| 2 | **शिक्षा सम्बंधित समस्या** | **सार्वजनिक** | गाँव में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या अध्यापकों की कमी है। जो अध्यापक अभी वर्तमान में कार्यरत हैं, वे भी समय पर नहीं आते हैं। स्कूलों में खेल के मैदान की स्थिति सही नहीं है। स्कूलों में | गाँव में प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में सभी व्यवस्थायें पूरी और अच्छी दी जाये। नए अध्यापकों की नियुक्ति की जाये और अध्यापकों को समय पर आने के लिए पाबंद किया जाना चाहिये। शौचालयों की | **तात्कालिक** |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | छात्र-छात्राओ के लिए अलग-अलग शौचालय भी नहीं है। बच्चों को पढ़ाने के लिए कक्षा कमरों की कमी है। पीने के पानी के लिए टंकी और शुद्ध जल की उचित व्यवस्था नही है। | मरम्मत करके पानी और सफाई की व्यवस्था होवे। | |
| **3** | **पेयजल की समस्या** | **सार्वजनिक** | गाँवमें 10 चालू कुएं और 8 चालू हैंडपंप हैं। गाँव में 5 कुएं और 4 हैंडपंप सूखे हैं, या पानी नहीं आता है। जो चालू हैं, उनका पानी भी फ्लोराइड युक्त है। गाँव का जलस्तर 250 फीट से नीचे चला गया है। गर्मी के समय लोग बोरवेल से सिंचाई के लिए पानी अधिक निकाल लेते हैं, जिस कारण पानी की कमी हो जाती है। | जिन कुओं में पानी खत्म हो गया है, उन्हें गहरा करवाना। जो हैंडपंप बंद हो गये हैं, उनकी मरम्मत कर गहरा करवाना और शुद्ध पानी की आपूर्ति के लिए गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकि फ्लोराइड की समस्या वाले एरिया को शुद्ध पेयजल मिल पाए। गाँव के टूटे हुए एनिकट की मरम्मत करवाना। जिससे गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊँचा किया जा सकता है। | **दीर्घकालिक** |
| **4** | **रास्ते की समस्या** | **सार्वजनिक** | गाँव में रास्तों की कमी है। गाँव की पक्की सड़कें टूटी हुई हैं। सबसे ज्यादा समस्या उन घरों की है जो गाँव के अंदरूनी हिस्से में रहते हैं। जहाँ सड़कें कच्ची हैं और बारिश के दौरान मिट्टी कीचड़ में बदल जाती है। सी.सी. सड़कों की नालिया नहीं | गाँवसभा कमेटी के गठन के बाद जहाँ-जहाँ रास्ते नहीं हैं, वहाँ के प्रस्ताव लिए गए हैं और सी.सी. सड़क मरम्मत करना और नालियाँ बनाना। कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना। सड़क किनारे नालियों की व्यवस्था और रोड लाइट की व्यवस्था करना। | **तात्कालिक** |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | बनी हैं। | | |
| 5 | **सरकारी योजनाओं का सही क्रियान्विति ना होना** | **व्यक्तिगत** | गाँव में आवास योजना में लोगों को मकान बनने के बाद किश्तों का भुगतान नहीं हुआ है। जिनका नाम आवास लाभान्वितों की सूची में नहीं है, उनका नाम देकर मकान बनवाना। पेंशन में समस्या यह है कि गाँव में सरकारी कागजातों में उम्र अलग-अलग होने से भी लोगों की पेंशन बंद है। गाँव में लोगो कों शौचालय योजना के पैसे भी नहीं मिले हैं। पशुबाड़ा भी लोगो को नहीं मिला है। | गाँव के सबसे जरूरतमंद लोगों को आवास निर्माण हेतु आवेदन कराना और उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है, उनको पेंशन योजना से जोड़ना। बंद पेंशन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना। गाँव में लोगो को शौचालय और पशुबाड़ा निर्माण योजना का पूरा लाभ दिलाना। | **तात्कालिक** |
| 6 | **खाद्य सुरक्षा का पूरा लाभ नहीं मिलना** | **सार्वजनिक** | राशन की दुकान पर अक्सर पॉस मशीन में इन्टरनेट से कनेक्ट न होने की समस्या आती रहती है। अनाज में केवल गेहूँ दिया जाता है। शक्कर और केरोसिन त्यौहार पर ही मिलता है। | राशन की दुकान का स्थान तय करके गाँव में ही खुलवाना। जिन लोगों को राशन नहीं मिल रहा है, उनके नाम योजना में जुड़वाने के लिए गाँव सभा में प्रस्ताव लेना। | **तात्कालिक** |
| 7 | **आंगनवाड़ी केंद्र** | **सार्वजनिक** | तीनों ही जर्जर भवनों की छतों पर चाइना मोजिक करवा कर ठीक करवाना। लोगों को ख़राब पोषाहार की शिकायत है। | गुणवत्तापूर्ण पोषाहार उपलब्ध कराना। नयी आंगनवाड़ी निर्माण करवाना। पोषाहार की कालाबाजारी को रोकना। | **तात्कालिक** |

**संसाधन आकलन व SWOT विश्लेषण**

| **S- Strengths**<br>**शक्तियां** | **W- Weakness**<br>**कमजोरी** | **O- Opportunities**<br>**अवसर** | **T- Threats**<br>**चुनौतियां** |
|---|---|---|---|
| **जल**<br>नाले<br>तालाब<br>एनिकट<br>कुआं<br>सार्वजनिक बावड़ी<br>हैंडपंप | गाँव में 2 छोटे बरसाती नाले हैं, जिसमे से एक पर 1 एनिकट भी बना है, लेकिन यह पुराना हो गया है। बाँध में दरारे होने से पानी रिस जाता है और गर्मी में पानी सूख जाता है। कुओं को रिचार्ज करने की व्यवस्था नहीं करना। अधिकतर कुएं और हैंडपंप सूखे हैं। गाँव में जल की कमी ना हो इसके लिए गाँव के लोगों में जागरूकता की कमी। | गाँव सभा में प्रस्ताव लेकर जहाँ पानी का बहाव अच्छा है, वहाँ कच्चे-पक्के चेकडैम निर्माण किया जाये। बरसात के पानी को योजनाबद्ध तरीके से अगर रोका जाए तो गाँव में पानी के संकट को दूर किया जा सकता है। इससे भू-जलस्तर को भी ऊँचा उठाकर सिचाई और अशुद्ध पीने के पानी के संकट को दूर किया जा सकता है। जल स्तर एकदम से नीचे न जाये इसके लिए सही और उचित प्रबन्धन व्यवस्था करना। गाँव सभा में इसके लिए प्रस्ताव लेना। | पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने को कोई कार्य योजना नहीं होना। गाँव के लोगों की उदासीनता। |
| **आवागमन -**<br>कच्चे रास्ते<br>सी.सी.सड़क<br>पक्की सड़कें | अंदरूनी भागों में जाने के लिए कच्चे रास्तों को सी.सी. नहीं करना। टूटी हुई पक्की सड़क और सी.सी. सड़क के किनारे पर नालियाँ नहीं बनी हैं। रोड लाइट की माँग नही करना। | रास्ते ठीक होने से गाँव में साधन आ-जा सकते हैं, जिससे छोटे-मोटे व्यवसाय किए जा सकते हैं। लोगों को आने-जाने में समय की बचत होगी। रोड लाइट लगने से दुर्घटनाओ की संभावना कम हो जायेगी। नालियाँ बनने से रोड पर कीचड़ नहीं होगा और गंदगी | गाँव के लोगों में जागरूकता की कमी। समस्या को लेकर अधिक से अधिक लोगों का गाँव सभा में नहीं आना। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | नहीं फैलेगी। | |
| **आजीविका के साधन** | गाँव में रोजगार के साधन का अभाव। मनरेगा में 100 दिन से कम काम मिलता है और नपती पूरी नहीं होती है। मजदूरी कम मिलना। सरकारी रोजगार प्रशिक्षण नहीं हो रहे हैं। | गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ियों पर वृक्षारोपण किया जाये। अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का पालन, सब्जी के खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं। घरेलू उद्योग जैसे पापड़ बनाना, अचार बनाना, मुरब्बा बनाना, कपड़े के बैग बनाना आदि भी किये जा सकते हैं। तालाबों की मरम्मत और एनिकट की ऊँचाई बढ़ा कर मछलीपालन, मधुमक्खी पालन करके भी आय बढाई जा सकती है। | गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन का अभाव।<br>खेती में उन्नत बीज का अभाव। जमीन और पहाड़ियों और जल-स्रोतों के बेहतर प्रबंधन की कमी। |
| **भूमि** | गाँव की खाली पड़ी बिलानाम जमीन और पथरीली जमीन का समुचित प्रबन्धन नहीं होना। सभी लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन नहीं होना। लोगों के पास उनके कब्जे की जमीन के पट्टे ना होना। खेती में रासायनिक खाद का अधिक प्रयोग। मिट्टी की जाँच नहीं करवाना। पानी के खारेपन से मिट्टी कठोर हो रही है। | खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना। गाँव की सार्वजनिक खाली पड़ी जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करवाना। | सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का अभाव। सिंचाई का अभाव खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव। |

➢ **नजरिया नक्शा**

भागेला फला नयागाँव पुनाली का नजरी नक्शा ग्राम पं. पुनाली
पं. स. दोवड़ा जिला- डूँगरपुर (राज.) जमीन- 25 हैक्टयर
उत्तर
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण
वन विभाग- वाडा ठथाई
पक्की सड़क
पक्की सड़क
रा. प्रा. वि.
भागेला फला
आंगनवाड़ी केन्द्र भागेलाफला
चबूतरा
मन्दिर
नाला
हेण्डपम्प
हेण्डपम्प
30
मकान
हेण्डपम्प
कच्ची सड़क
60
मकान
नाला
आवश्यकता-1
20
मकान
हेण्डपम्प
कच्चा रास्ता
आवश्यकता-2
पक्की सड़क
40
मकान
आवश्यकता-2
श्मशान
श्मशान
आवश्यकता 2
सार्वजनिक बावडी
समस्त गॉव के व्यक्तिगत कुँए
15
भूमि का विवरण
कुली - [redacted]
सिंचित - [redacted]
पिद्रला तालाब की पाल
पिद्रला तालाब
नाला
रा. उ. प्रा. वि. नयागाँव पुनाली
पातेली

**गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -**

| क्र. सं. | प्रस्तावित कार्य | संख्या |
|---|---|---|
| 1 | पेंशन के संबंध में | |
| | वृद्धा पेंशन | 20 |
| | विधवा पेंशन | 3 |
| | विकलांग पेंशन | 4 |
| | एकल नारी पेंशन | 1 |
| | पालनहार योजना | 15 |
| 2 | प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री आवास निर्माण | 20 |
| 3 | शौचालय निर्माण | 14 |
| | शौचालय निर्माण बकाया किस्त भुगतान | 3 |
| 4 | स्कूल के संबंध में | |
| | • अध्यापकों की नियुक्ति | 2 |
| | • पानी की व्यवस्था | 1 |
| | • शौचालय की व्यवस्था | 1 |
| | • आर.ओ. | 1 |
| | • कक्ष निर्माण | 2 |
| | • परकोटा निर्माण | 1 |
| | • खेल मैदान के लिए समतलीकरण | 1 |
| 5 | राशन की दूकान के सम्बन्ध में | 1 |
| 6 | उप स्वास्थ्य केंद्र | 1 |
| 7 | रास्ता निर्माण के सम्बन्ध में | |
| | • कच्ची सड़क (ग्रेवल) | 7 |
| | • सीसी सड़क | 2 |
| 8 | आंगनवाड़ी भवन के संबंध में | |
| | • आंगनवाड़ी भवन की मरम्मत | 1 |
| 9 | केटेगरी 4 के कार्य | 45 |
| 10 | नए हैंडपंप | 9 |
| | पुराने हैंडपंप की मरम्मत करने के संबंध में | 0 |
| 11 | तालाब गहरीकरण के संबंध में | 5 |
| 12 | चेक डैम निर्माण के सम्बन्ध में | 1 |
| 13 | सामुदायिक भवन निर्माण | 1 |

| | | |
|---|---|---|
| 14 | चबूतरा निर्माण के संबंध में | 3 |
| 15 | गाँव सभा में विवाद निपटारा करने के सम्बन्ध में | 1 |
| 16 | सामाजिक कुरीतियों पर गांव सभा में रोक लगाने के संबंध में<br>बाल विवाह<br>बाल श्रम<br>महिला हिंसा<br>डायन प्रथा<br>मौताणा | 1 |
| 17 | शमशान घाट के संबंध में | 1 |
| 18 | वृक्षारोपण के संबंध में | 2 |

**गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया -**

**फोटो गैलेरी -**

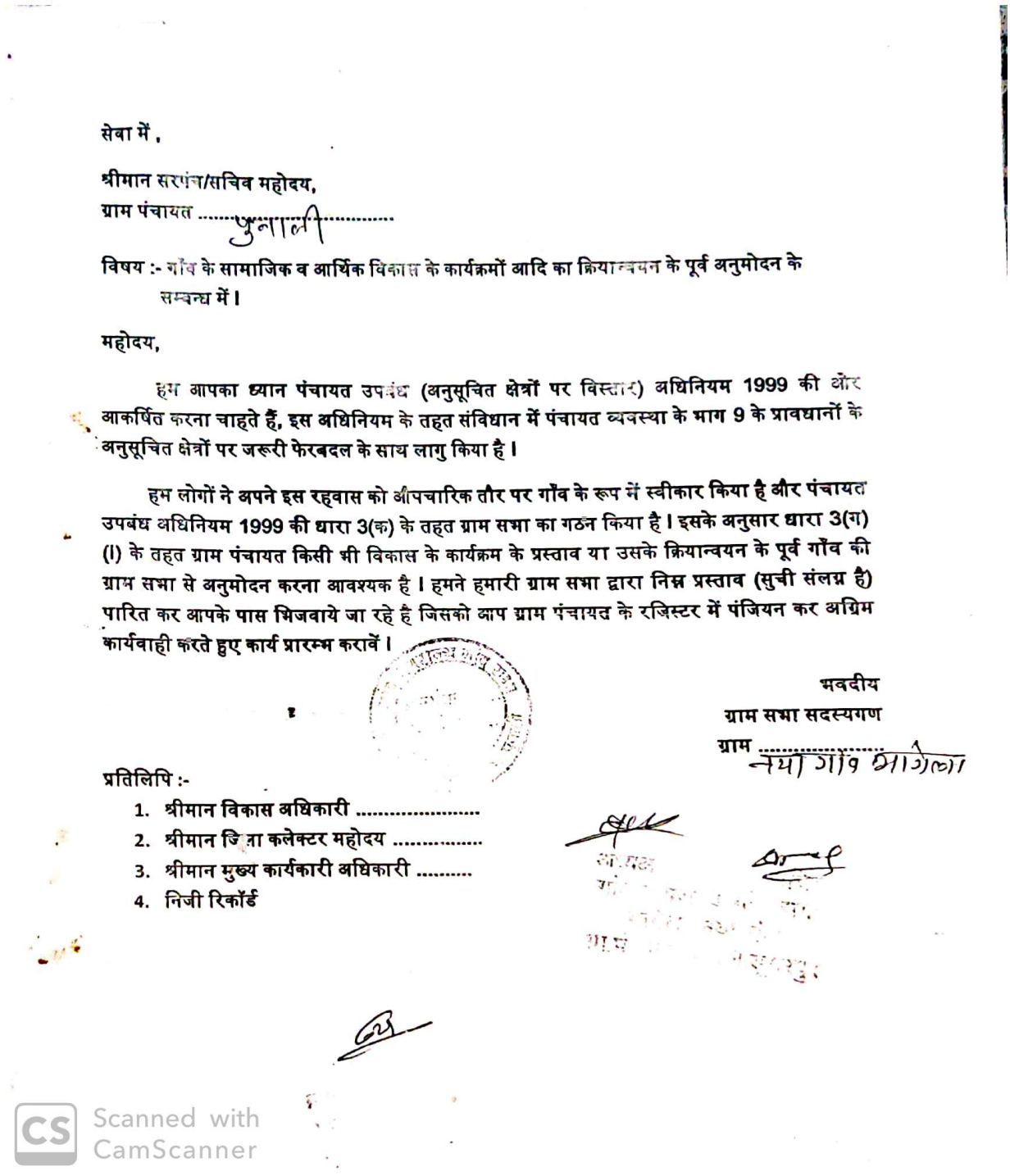

सेवा में ,

श्रीमान सरपंच/सचिव महोदय,
ग्राम पंचायत ........जुनाली..........

विषय :- गाँव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, इस अधिनियम के तहत संविधान में पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रों पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगों ने अपने इस रहवास को औपचारिक तौर पर गाँव के रूप में स्वीकार किया है और पंचायत उपबंध अधिनियम 1999 की धारा 3(क) के तहत ग्राम सभा का गठन किया है। इसके अनुसार धारा 3(ग) (I) के तहत ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गाँव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है। हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न है) पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर में पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय
ग्राम सभा सदस्यगण
ग्राम .........नया गॉव आगेला

प्रतिलिपि :-

1. श्रीमान विकास अधिकारी ......................
2. श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय ................
3. श्रीमान मुख्य कार्यकारी अधिकारी ..........
4. निजी रिकॉर्ड

Scanned with CamScanner

**प्रस्ताव कवरिंग**

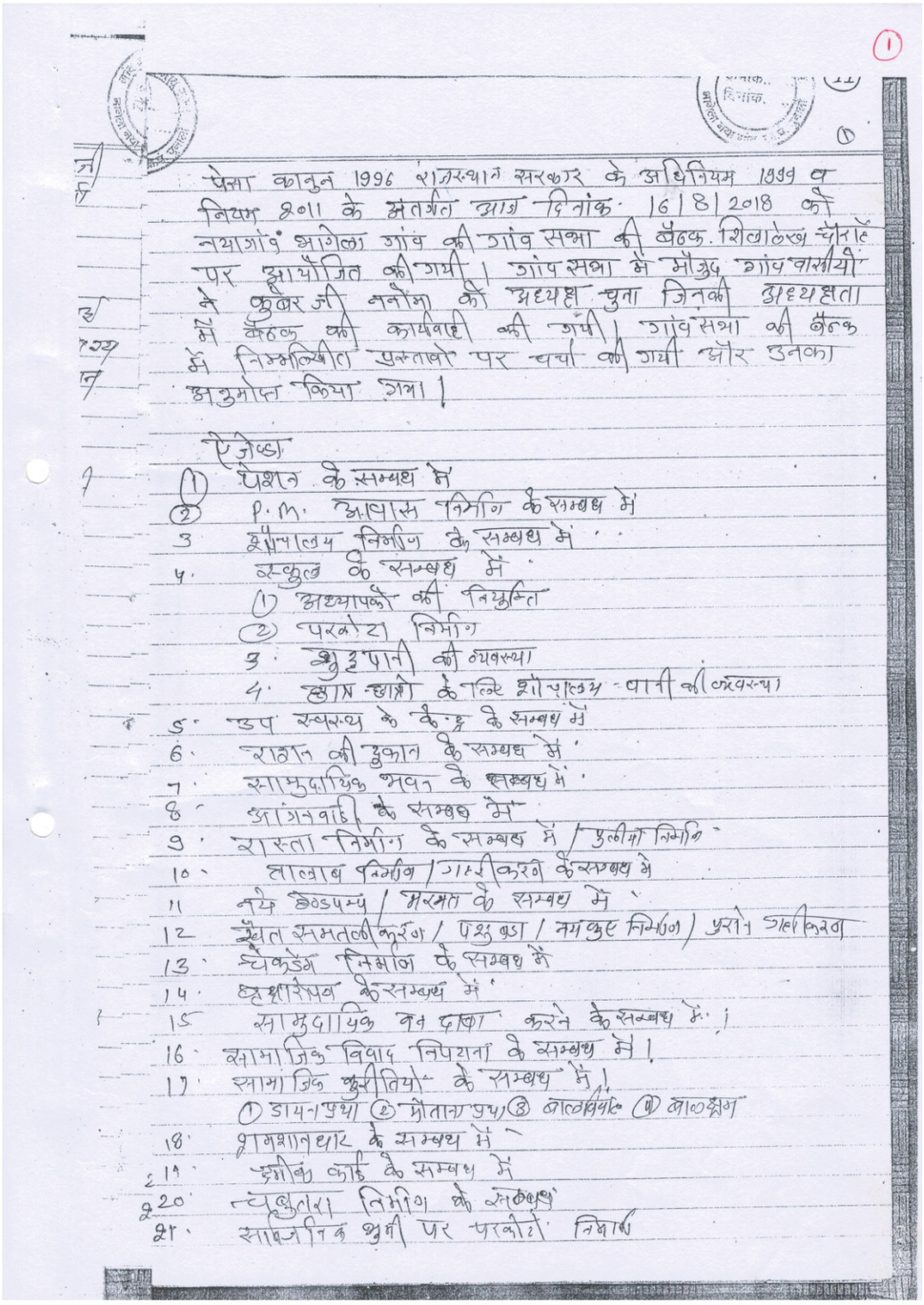

पेसा कानुन 1996 राजस्थान सरकार के अधिनियम 1999 व नियम 2011 के अंतर्गत आज दिनांक 16/8/2018 को नयागांव भागेला गांव की गांव सभा की बैठक शिलालेख चौराहे पर आयोजित की गयी। गांव सभा मे मौजुद गांव वासीयों ने कुबेर जी ननोमा को अध्यक्ष चुना जिनकी अध्यक्षता मे बैठक की कार्यवाही की गयी। गांव सभा की बैठक मे निम्नलिखित प्रस्तावो पर चर्चा की गयी और उनका अनुमोदन किया गया।

एजेण्डा

1. पेशन के सम्बध मे
2. P.M. आवास निर्माण के सम्बध में
3. शौचालय निर्माण के सम्बध में
4. स्कुल के सम्बध मे
   1. अध्यापको की नियुक्ति
   2. परकोटा निर्माण
   3. शुद्ध पानी की व्यवस्था
   4. छात्र छात्रो के लिऐ शौचालय पानी की व्यवस्था
5. उप स्वस्थ्य के केन्द्र के सम्बध में
6. राशन की दुकान के सम्बध मे
7. सामुदायिक भवन के सम्बध मे
8. आंगनवाडी के सम्बध मे
9. रास्ता निर्माण के सम्बध मे / पुलीया निर्माण
10. तालाब निर्माण / गहरीकरण के सम्बध मे
11. नये हेण्डपम्प / मरमत के सम्बध मे
12. खेत समतलीकरण / पशु बाडा / नये कुए निर्माण / पुराने गहरीकरण
13. चेकडेम निर्माण के सम्बध मे
14. वृक्षारोपण के सम्बध मे
15. सामुदायिक वन दावा करने के सम्बध मे।
16. सामाजिक विवाद निपटाना के सम्बध मे।
17. सामाजिक कुरीतियो के सम्बध मे।
   1. डायन प्रथा 2. मौताना प्रथा 3. बालविवाह 4. बालश्रम
18. श्रमशानघाट के सम्बध मे
19. ट्रांसफार्मर के सम्बध मे
20. चबुतरा निर्माण के सम्बध मे
21. सार्वजनिक भुमी पर परकोटा निर्माण

**प्रस्ताव प्रथम पेज**

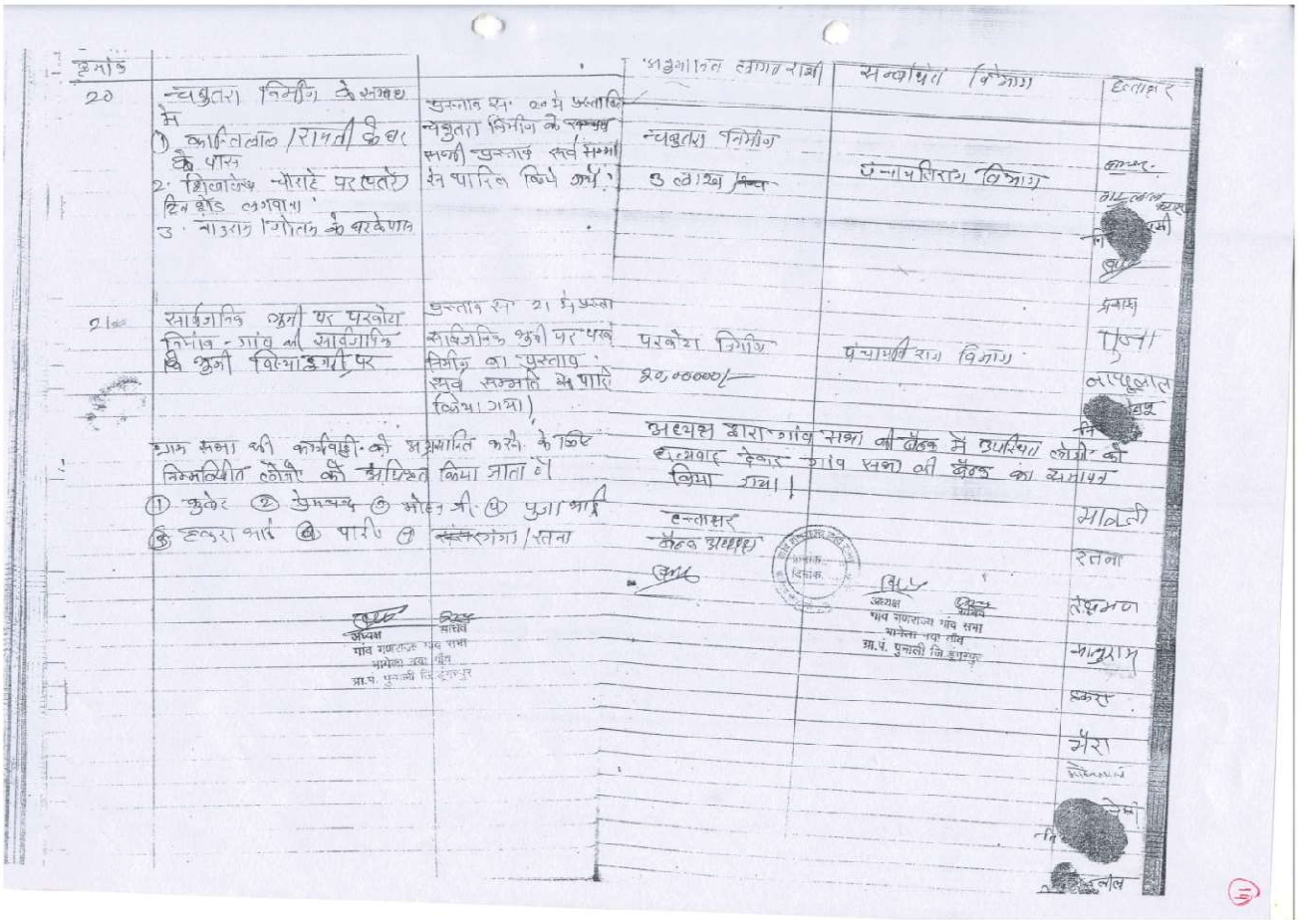

**प्रस्ताव अंतिम पेज**

**विलेज प्लानिंग फेसिलिटेटर टीम [1](वीपीएफटी)**

1. हकरा / धुला ननोमा
2. नाथूलाल / रूपसी ननोमा
3. पूंजा / गौतम ननोम

---

उपरोक्त आँकड़ें वीपीएफटी द्वारा दी गई जानकारी पर आधारित हैं